Topic – DEMOGRAPHIC FACTORS AND SOCIAL CHANGE.

जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन

Sol. सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में जनसंख्यात्मक कारकों का अत्यधिक महत्व है। जनसंख्या की विशेषताएं अनेक रूपों में सामाजिक परिवर्तन को उत्पन्न करती है। आगे हम समाज पर जनसंख्या की कुछ विशेषताओं के प्रभावों की व्याख्या करने पर तथ्य स्पष्ट हो जायेगा।

(1) अति जनसंख्या का प्रभाव (Effect of excess Population)

यदि किसी देश अथवा समाज में जनसंख्या के सामाजिक प्रभावों का निरीक्षण करना है तो उस देश अथवा समाज में अति जनसंख्या की परिस्थिति से यह अध्ययन अधिक सरल होगा। जब किसी देश में अति जनसंख्या की स्थिति होती है तो यह स्थिति अनेक प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों को जन्म देती है। अति जनसंख्या का अभिप्राय उस स्थिति से है जबकि देश में पोषण के लिए खाद्यान्न की कमी हो और जनसंख्या अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ रही हो। यद्यपि इस स्थिति का निर्धारण देश की आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में ही किया जाना चाहिए। अति जनसंख्या के कारण सामाजिक ढांचे में अनेक प्रकार के परिवर्तन हो जाते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारत है जहां जनसंख्या की बेतहाशा रूप से जनसंख्या बढ़ी है। जब किसी देश में अति जनसंख्या से समाज में निर्धनता, बेकारी और भुखमरी का बोलबाला हो जाता है। माल्थस के इस बारे में विचार है कि जब किसी देश में अति जनसंख्या की स्थिति होती है और खाद्यान्न की पूर्ति बहुत कम हो जाती है तो समस्या का समाधान स्वयं प्रकृति ही करती है और कुछ प्राकृतिक उपायों।

(2) जन्मदर और मृत्युदर का प्रभाव (Effect of Birth.

Rate and death Rate) — जन्मदर और मृत्युदर का भी विभिन्न रुपों में समाज पर प्रभाव पड़ता है। यदि किसी देश अथवा समाज में जन्मदर घटती है और मृत्युदर अधिक हो जाती है तो उस देश की जनसंख्या घट जायेगी जिससे उस समाज में क्रियाशील व्यक्तियों की कमी होगी और इस देश की आर्थिक स्थिति गिर जायेगी। इसके विपरीत यदि किसी देश की मृत्युदर कम हो रही है और जन्मदर बढ़ रही है तो अति जनसंख्या की स्थिति में देश का आर्थिक और औद्योगिक विकास होगा और उसके निवासियों का जीवन-स्तर आदि भी ऊँचा होगा।

इसी प्रकार जन्मदर और मृत्युदर अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को जन्म देते हैं। कबर और फ्रेशर के अनुसार यदि किसी समाज में जन्मदर बढ़ रही है तो उस समाज में गर्भनिरोध, विलम्ब-विवाह, गर्भपात, शिशु हत्या आदि अनेक मात्रा में देखने को मिल सकते हैं।

(3) जनसंख्या के रचना का प्रभाव (effect of composition of population) — जनसंख्या के घटने-बढ़ने से उसकी रचना भी बदल जाती है। साधारणतः जनसंख्या की रचना में व्यक्तियों की आयु-रचना, बच्चों व युवकों में अनुपात, स्त्रियों और पुरुषों की संख्या आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन सभी बातों का जनसंख्या का सामाजिक संगठन और स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि किसी समाज में वृद्धों और बच्चों की संख्या अधिक है तो स्वभावतः उस देश में आर्थिक उत्पादन अधिक न हो सकेगा क्योंकि युवा व्यक्ति ही उत्पादन का कार्य अच्छी प्रकार से कर सकते हैं।

(4) देशागमन और देशान्तरगमन का प्रभाव (effect of immigration and emigration) — ~~देशागमन~~ देशागमन का अर्थ है - बाहर या दूसरे देश से लोगों का आना और देशान्तरगमन का अर्थ है - देश के लोगों का अन्य देशों को जाना। दोनों ही स्थितियों में समाज में अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन जन्म देते हैं। इन दोनों ही स्थितियों के फलस्वरूप जनसंख्या की रचना में परिवर्तन होता है और समाज में होने वाले सभी परिवर्तन इससे घनिष्ट सम्बन्धित होते हैं। भारत और अमेरिका इसका अति उत्तम उदाहरण है।

समाप्त